प्रस्तावना

भाषा वह साधन है जिसके द्वारा मनुष्य अपने विचारों को प्रकट करता है और दूसरों के विचारों को समझ सकता है। मनुष्य के जो कार्य हैं उसके विचारों से ही उत्पन्न होते हैं और इन कार्यों में दूसरों की सहायता के लिए मनुष्य अपना विचार दूसरों को प्रकट करता है। दुनिया का अधिकांश व्यवहार बोलचाल अथवा लेखन से चलता है। इसीलिए 'कामता प्रसाद गुरु' ने भाषा को जगत व्यवहार का मूल माना है। ऐसे ही भारत के स्वतंत्र होने के पश्चात संविधान के अनुसार हर राज्य को भाषा के आधार पर विभाजित किया गया है।

महाराष्ट्र की स्थापना 1 मई 1960 में की गई। भारत की तरह महाराष्ट्र भी विभिन्नता से भरा हुआ राज्य है। इसमें अनेक प्रकार की बोलियाँ, विभिन्न संस्कृति और साहित्य विधाएँ देखने को मिलती है। मराठी महाराष्ट्र की प्राचीन भाषा है, इसका उदभव और विकास प्राचीन शिलालेखों, ताम्रपत्रों और ग्रन्थों के आधार पर हुआ है । मराठी भाषा का साहित्य लिखना संतों ने शुरू किया था। जैसे- ज्ञानेश्वर की ज्ञानेश्वरी, नामदेव की गाथा, एकनाथ का भागवत, मुक्तेश्वर का महाभारत, तुकाराम का भागवत आदि अनेक धार्मिक ग्रन्थों की रचना हुई है। 'ज्ञानेश्वरी' मराठी साहित्य का ही नहीं अपितु भारतीय साहित्य का उज्ज्वल रत्न है। यह रत्न महर्षि व्यास रचित श्रीमदभगवतगीता का अनुवाद है। इस ग्रंथ से मराठी भाषा में अनुवाद की शुरुआत हुई। साहित्य को समाज का दर्पण कहा जाता है। इस प्रकार मराठी साहित्य का विस्तार अनुवाद के माध्यम हो रहा है। साहित्य से ज्ञान, भाषा, रीति-रिवाज, संस्कृति का आदान-प्रदान हो रहा है। अनुवाद एक ऐसी प्रक्रिया है, जो एक भाषिक सामाग्री को दूसरी भाषा में रूपांतरित करता है। यद्यपि वह साहित्य किसी भी भाषा का हो उसमें सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक तथा साहित्य का दर्शन होता है। आधुनिक काल में विकसित गद्य विधाओं में उपन्यास का महत्वपूर्ण स्थान है । उपन्यास और कहानी को अत्यंत लोकप्रिय स्वरूप प्राप्त हुआ है। मराठी साहित्य की शुरुआत संस्कृत, फारसी, अंग्रेजी भाषा के साहित्य के अनुवाद कार्य से हुआ है। मराठी में पहला मौलिक उपन्यास लिखने का श्रेय लक्ष्मण शास्त्री हलवे को मिला है, इनके मराठी भाषा में लिखित 'मुक्तामाला' उपन्यास का प्रकाशन 1918 में हुआ था। इस उपन्यास के प्रकाशन से मराठी साहित्य में उपन्यास लेखन की शुरुवात हुई। साहित्य में उपन्यास लोकप्रिय विधा है। इस विधा

में मानव जीवन के सभी पक्षों को उदघाटित किया जाता है। इसलिए कहा जाता है कि उपन्यास जीवन का महाकाव्य है। उपन्यास में लेखक स्वतंत्र होता है, वह स्वच्छंद होकर अपने मानस पटल पर पड़े हुए जीवन के जीवंत अनुभव सहज एवं स्वाभाविक ढंग से यथार्थ रूप में अभिव्यक्त करता है। इस कारण पाठक वर्ग इस विधा को पढ़ने में रुचि रखते हैं। आज हमारे मनोरंजन की भाषा आधुनिक भारतीय भाषाएँ हैं। ललित साहित्य की भाषा आधुनिक भारतीय भाषा है लेकिन विज्ञान और ज्ञान की भाषा अंग्रेजी को माना जाता है। भारत जैसे बहुभाषा-भाषी राष्ट्र में अनुवाद की अत्यंत आवश्यकता है। क्योंकि अनुवाद एक अपरिचित भाषा की ज्ञान-विज्ञान, विचारों एवं साहित्यिक सामग्री को परिचित भाषा में उपलब्ध करता है। प्राचीन काल में अनुवाद का उपयोग धार्मिक ग्रन्थों में व्यक्त विचारों को जन-कल्याण के लिए किया जाता था। परंतु आज इस में परिवर्तन हो गया है। आज हर एक क्षेत्र में अनुवाद की आवश्यकता पड़ती है। चाहे वह सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, साहित्यिक क्षेत्र हो इसके बिना संभव नहीं है। इसलिए अनुवाद आज व्यक्ति और सामाजिक-परिवेश आदि को जानने एवं समझने के लिए एक मात्र माध्यम है।

बहुभाषी भारत में मराठी और हिंदी दोनों भाषाओं में बहुत समानताएँ हैं। इन दोनों भाषाओं का मूल स्त्रोत संस्कृत भाषा है। दोनों भाषाओं की लिपि समान है। दोनों भाषाओं में तत्सम और तदभव शब्दों का प्रयोग होता है। वाक्य रचना में भी थोड़ी-बहुत समानता है। अंतर यह है कि मराठी भाषा के वाक्य रचना में संस्कृत की तरह लंबे वाक्य लिखने की पद्धति है। अतः वाक्य रचना समान होने के कारण भी मराठी से हिंदी और हिंदी से मराठी में अनुवाद करना सहज, सरल प्रतीत नहीं होता है। इसका कारण मराठी भाषा का स्वभाव धर्म है। प्रत्येक भाषा की अपनी एक भाषिक संरचना होती है, प्रत्येक भाषा का अपना एक ढंग होता है। प्रत्येक शब्द की अलग छटा होती है। भाषा बदलने पर शब्दों के अर्थ बदलते हैं । इसलिए अनुवादक को दोनों भाषाओं की संरचना, रूप, शब्दावली, लिखने का ढंग, स्वभाव धर्म आदि को समझना आवश्यक है।

साहित्यिक अनुवाद में लेखक को रचना-सृजन में जिस कौशल की आवश्यकता होती है उसी कौशल की आवश्यकता अनुवादक को भी होती है। अनुवाद एक कठिन कार्य है। अनुवाद करते समय अनुवादक के लिए अनेक गंभीर समस्याओं का समाधान करना कठिन कार्य होता है।

ग्रामीण साहित्य का अनुवाद करने के लिए अनुवादक को ग्रामीण परिवेश, संस्कृति, लोकोक्ति, मुहावरों का ज्ञान होना आवश्यक है। स्रोत भाषा के सांस्कृतिक शब्दों को लक्ष्य भाषा में सही अर्थ में लेना अनुवादक के सामने बड़ी समस्या है। अनुवाद कार्य को सरल और प्रामाणिक बनाने के लिए और अनुवाद विज्ञान का विकास करने के लिए अनुवाद क्षेत्र में शोध कार्य हो रहें हैं। अनुवाद के क्षेत्र में शोध द्वारा नए-नए तथ्यों एवं माध्यमों का विकास हो रहा है। अनूदित सामग्री के समीक्षात्मक अध्ययन में मूल और अनूदित पाठ के विवेचन-विश्लेषण के द्वारा अनुवाद कौशल का परीक्षण किया जाता है। अनूदित कृति के मूल्यांकन एवं समीक्षा के माध्यम से पता चलेगा की यह अनुवाद कितना मौलिक एवं प्रामाणिक हुआ है। अतः अनुवाद समीक्षा का तात्पर्य है "मूल उपन्यास की तुलना में अनूदित उपन्यास के गुण-दोष का विवेचन करना।" वास्तव में अनुवाद कार्य का अध्ययन अनुवाद समीक्षा है जिससे अनुवाद की गुणवत्ता और मानकता का पता चलता है। अनुवाद कार्य एक कौशल है, अनुवाद समीक्षा एक ज्ञानात्मक विधा है। ये दोनों अनुवाद प्रक्रिया के समस्तरीय पहलू हैं। अपनी प्रकृति और महत्व के कारण अनुवाद समीक्षा एक स्वतंत्र विधा है। इस क्षेत्र में काम करते हुए सिर्फ अच्छा अनुवाद ही नहीं करना चाहिए बल्कि अच्छे और बुरे का भेद भी करना चाहिए। अनुवाद को सफल और प्रामाणिक सिध्द करने के लिए मैंने मराठी भाषा के 'झोंबी' आत्मकथात्मक उपन्यास का हिंदी भाषा के अनूदित उपन्यास 'जूझ' के आधार पर समीक्षात्मक अध्ययन किया है। अतः मेरे लघु शोध कार्य का विषय "मराठी से हिंदी में अनूदित 'जूझ' उपन्यास का समीक्षात्मक अध्ययन" है।

मूल उपन्यास के लेखक 'आनंद यादव' मराठी साहित्य के प्रसिद्ध ग्रामीण साहित्यकार हैं, उनका संपूर्ण साहित्य ग्रामीण परिवेश के आधार पर लिखा हुआ है। उनका जन्म 30 नवम्बर 1935 में कोल्हापूर के कागल नामक गाँव में हुआ था, उन्होंने अपने ग्रामीण परिवेश के जीवन-अनुभव को लेखन द्वारा चित्रित किया है। आनंद यादव पुणे विद्यापीठ के मराठी विभाग में विभागाध्यक्ष रहें। वह बहु-प्रतिभाशाली व्यक्ति हैं। उपन्यास, कहानी, कविता, आलोचनात्मक निबंध आदि विभिन्न विधाओं में उनके 40 से अधिक किताबें प्रकाशित हुई हैं और वे साहित्य अकादेमी पुरस्कार सहित अनेक राज्य स्तरीय पुरस्कारों से सम्मानित हैं। आनंद यादव के 'नटरंग' और 'झोंबी' प्रसिध्द उपन्यास हैं। 'नटरंग' उपन्यास का फिल्मांकन होने के कारण आनंद यादव का नाम पूरे देश में प्रसिद्ध हुआ। झोंबी उपन्यास को 1990 में साहित्य अकादमी

पुरस्कार प्राप्त हुआ। इस उपन्यास का अनुवाद केशव प्रथमवीर ने 'जूझ' नाम से 1991 में किया था और उसे 'भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली' ने प्रकाशित किया है ।

मूल मराठी 'झोंबी' आत्मकथात्मक उपन्यास में लेखक ने अपनी आत्मकथा के साथ-साथ अपने जीवन की घटनाएँ , ग्रामीण जीवन के अनुभव, शिक्षा के प्रति प्रेम और संघर्ष- इन सभी का यथार्थ चित्रण किया है। इस उपन्यास में मराठी भाषा के ग्रामीण सांस्कृतिक शब्दावली का प्रयोग अत्यधिक हुआ है। 'झोंबी' का मूल अर्थ 'जूझना' या 'संघर्ष' है। इस उपन्यास में एक किशोर के देखे और भोगे हुएँ गँवई जीवन के खुरदरे यथार्थ और उसके रंगारंग परिवेश की अत्यंत विश्वसनीय जीवंत गाथा है। इस आत्मकथात्मक उपन्यास में विकट जीवन का मर्मस्पर्शी चित्रण तो है ही, इसमें अस्त-व्यस्त लेकिन अलमस्त निम्नमध्यवर्गीय ग्रामीण समाज और लड़ते- जूझते किसान-मजदूरों के हाहाकारी संघर्ष की भी अनूठी झाँकी है। गाँव में प्रयुक्त लोकोक्तियों और मुहावरों का प्रयोग इस उपन्यास में हुआ है। जिसके कारण अनुवादक को इस उपन्यास का हिन्दी अनुवाद करने में अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ा है। अनुवादक ने मूलमराठी उपन्यास को हिंदी भाषा में अनूदित करते समय शब्दानुवाद, भावानुवाद और रूपांतरण करके मूल भाव अनूदित उपन्यास में लाने का प्रयास किया है। इस प्रक्रिया में अनुवादक से कहीं-कहीं त्रुटियाँ एवं भूल होने से कुछ शब्दों और वाक्यों का मूल भाव अनूदित कृति में अभिव्यक्त नहीं हुआ है। अनुवादक ने अनूदित उपन्यासमें कहीं-कहीं मूल पाठ में वाक्य अंश को छोड़ने का और कहीं-कहीं वाक्य अंश को जोड़ने का प्रयास किया है परंतु इससे मूल कथ्य को कहीं भी क्षति नहीं पहुँची है।

अतः इस लघु-शोध में मैंने भाषिक पक्ष को आधार बनाकर अनूदित 'जूझ' उपन्यास का समीक्षात्मक अध्ययन किया है। इसमें लघु शोध की आवश्यकता के अनुरूप इसे तीन अध्यायों में विभाजित किया है। पहला अध्याय "अनुवाद समीक्षा का सैद्धांतिक पक्ष" में अनुवाद का अर्थ, परिभाषा एवं अनुवाद की आवश्यकता और साहित्यिक अनुवाद को रेखांकित किया है। साथ ही अनुवाद समीक्षा का अर्थ, परिभाषा एवं स्वरूप को प्रस्तुत किया है। इस के बाद अनुवाद मूल्यांकन का अर्थएवं परिभाषा को रेखांकित किया है।

द्वितीय अध्याय "अनूदित 'जूझ' आत्मकथात्मक उपन्यास की हिंदी अनुवाद समीक्षा" में अनूदित उपन्यास का समीक्षात्मक अध्ययन करते हुए शब्द के स्तर पर, वाक्य के स्तर पर और

प्रोक्ति के स्तर पर अनुवाद समीक्षा करने का प्रयास किया है। साथ ही मूल और अनूदित उपन्यास में प्रयुक्त शब्द, वाक्य एवं प्रोक्ति की तुलना करके अनूदित पाठ के गुण-दोषों का विवेचन किया है। अनूदित पाठ मूल पाठ के तुलना में कितना सफल रहा है, मूल भाव अनूदित पाठ में अभिव्यक्त हो रहा है या नहीं, इन सभी बातों को अनुवाद समीक्षा में समझाने का प्रयास किया है।

तृतीय अध्याय "अनूदित 'जूझ' आत्मकथात्मक उपन्यास का अनुवाद मूल्यांकन" में अनूदित उपन्यास का मूल्यांकन करते हुए शैली के स्तर पर, संवाद के स्तर पर, सामाजिक-सांस्कृतिक स्तर पर, नाते-रिश्ते के स्तर पर, और लोकोक्तियाँ एवं मुहावरे के स्तर पर मूल्यांकन करने का प्रयास किया है। साथ ही मराठी और हिंदी जनमानस के सांस्कृतिक भिन्नताओं को स्पष्ट किया है। इस के उपरांत परिशिष्ठ में अनुवादक का परिचय, लेखक का उपन्यास और उपन्यास की कथावस्तु को रेखांकित किया है।

इस लघु-शोध कार्य में मैंने तुलनात्मक, समीक्षात्मक और विश्लेषणात्मक शोध-प्रविधि का उपयोग किया है। इन सभी प्रविधियों के आधार पर ही मैंने इस निष्कर्ष तक पहुचने की कोशिश की है कि मराठी ग्रामीण आत्मकथात्मक उपन्यास का अनुवाद कार्य कितना सफल रहा है। अनुवादक ने मराठी ग्रामीण संस्कृति को कितना समझाने का प्रयास किया है। मराठी ग्रामीण भाषा को समझकर उसका मूल भाव अभिव्यक्त हो रहा है या नहीं। अनुवादक को अनुवाद करने में कहाँ कठनाई सामना करना पड़ा। मूल उपन्यास के भाव को अनूदित उपन्यास में कितना सरल और स्पष्ट रूप से अभिव्यक्त किया है। मूल लोकोक्तियों एवं मुहावरों का अर्थ समझ कर उनका अनुवाद हिंदी भाषा के लोकोक्तियों एवं मुहावरों में करने का प्रयास किया है या नहीं। इन सभी का मूल्यांकन करने का प्रयास मैंने इस लघु-शोध कार्य में किया है। इस लघु-शोध कार्य के माध्यम से मैंने निम्नलिखित उद्देश्य को प्राप्त करने की कोशिश की है। जैसे

1. अनूदित कृति को प्रामाणिक बनाना।
2. मूल पाठ की अनूदित पाठ से तुलना करना।
3. अनूदित उपन्यास का समीक्षात्मक अध्ययन करना।
4. अनूदित पाठ का मूल्यांकन करना।
5. अनूदित पाठ और मूल पाठ का विश्लेषण करना।
6. महाराष्ट्र की संस्कृति को परिचित करना।

7. मूल लोकोक्तियाँ एवं मुहावरे के अनुवाद को देखना ।
8. अनुवादक को प्रसिद्धि दिलाना ।
9. मूल उपन्यास और लेखक को प्रसिद्धि दिलाना ।

प्रस्तुत लघु-शोध कार्य में मुझ से अनुवाद समीक्षा के कुछ पक्ष छूटगए हों तो यह मेरे लघु-शोध कार्य की सीमा हो सकती है । यह लघु-शोध कार्य आपके समक्ष प्रस्तुत है । यदि अनुवाद समीक्षा के क्षेत्र में यह लघु शोध-प्रबंध अंश मात्र भी योगदान करे तो मैं अपने इस प्रयास को सार्थक समझूँगा।

इस लघु शोध-प्रबंध को पूर्ण करतेसमय मुझे अत्यधिक हर्ष, संतृप्ति एवं आत्मविश्वास की अनुभूति हो रही है। मैंने अत्यंत रूचि एवं तटस्थ होकर अपना शोध कार्य पूर्ण करने का प्रयत्न किया है । यह शोध मेरे परिवार के आशीर्वाद, स्नेह, प्रोत्साहन एवं गुरुजनों के मार्गदर्शन, मित्रों की प्रेरणा से ही संभव हो पाया है। इन सभी के प्रति मैं सदैव आभारी रहूँगा । मैं अपने शोध निर्देशक डॉ. राम प्रकाश यादव का ह्रदय से आभार व्यक्त करता हूँ उन्होंने समय-समय पर मेरी समस्याओं का समाधान करते हुए मुझे मार्गदर्शन किया ।

अंत में मेरे माता-पिता और भाई-बहनों का आभारी हूँ जिनकी प्रेरणा और आशीर्वचन से यह कार्य सहज रूप से पूर्ण हो सका। इन सभी के प्रति मैं बहुत-बहुत आभारी हूँ।

नेव्हल अमोल आप्पासाहेब